आये बालक ने उनको अन्दर नहीं जाने दिया, तो भगवान ने पूछा कि तू कौन है ? बालक बोला मैं पार्वती पुत्र हूँ। भगवान सोचे ये पुत्र कहां से आया और त्रिशुल से उस बालक का गला काट दिया। माँ पार्वती आई देखा और बोली भगवान मेरे पुत्र को वापस जीवित करो। तो शिवजी ने गणों को भेजा कि जो स्त्री अपने पुत्र से विमुख होकर (पीठ देकर) सो रही हो, उसी बच्चे का सिर काटकर ले आओ। गण सभी जगह घूमते–घूमते जंगल में पहुँचे जहाँ एक हथिनी अपने बच्चे से विमुख होकर सो रही थी। गण उसका सिर काट लाये। भगवान ने उस सिर को बालक के शरीर पर जोड़ दिया और अमृत का छींटा दिया और बोले दुनिया में सबसे पहले गौरी पुत्र गणेश जी की पूजा होगी, बाद में दूसरे देवताओं की पूजा होगी। खोटी की खरी अधुरी की पूरी। हे ! गणगौर माता, हम सबको अमर सुहाग देना।

वैसाख की चौथ

चौथमाता की पूजा – हल्दी, कुमकुम, मेहन्दी, लच्छा, गुड़, घी का दीपक, पांच पींडया और एक लड्डू गणेश जी का प्रसाद, चौथ माता का कसुंबल, पुष्प आदि पूजा में लेते हैं। पाटा ढ़ालकर विनायक जी, चौथ माता मांडकर पूजा करे, कहानी कहे रात को चन्द्रमा देखकर अरग देकर जीमें ।

अरग देते समय बोलना – किसी भी चौथ के व्रत / वास में चन्द्रमा को अरग देते समय बोलें – चांदा हेलो ऊगीयो, हरिया बांस कटाय, साजन ऊबा बारने, आखा पाती लाय, सोना की सी सांकली गले मोत्यां रो हार,.....चौथ का चांद ने अरग देवता, जीवो वीर भरतार। ('.....' के स्थान पर चारों बड़ी चौथ के नाम लेवे)

वैसाख चौथ की कहानी – एक गाँव में सेठ–सेठानी थे ।उनको एक बेटा और उसकी बहू थी । बहू बरतन मांजकर पानी डालने नीचे जाती तो अड़ोस–पड़ोस की औरतें उससे पूछती आज खाने में क्या खाया।तो वह कहती, 'बासी कुसी तर बासी।' एक दिन जब वह